



सत्यमेव जयते
राजस्थान सरकार
Government of Rajasthan



Shri Bhajan Lal Sharma
Hon'ble Chief Minister

पंच गौरव जिला पुस्तिका सवाई माधोपुर



मुख्यमंत्री
राजस्थान

संदेश

राजस्थान को अपनी भौगोलिक विविधताओं, प्राकृतिक संपदा और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है। यहां हर जिले की अपनी एक विशिष्ट पहचान है, जो वहां की उपज, हस्तशिल्प, औद्योगिक उत्पाद, खनिज संपदा और पर्यटन स्थलों में परिलक्षित होती है। इन विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए राज्य सरकार ने पंच—गौरव कार्यक्रम की शुरुआत की है, जिसका उद्देश्य प्रत्येक जिले की क्षमता एवं विशिष्टता को पहचानते हुए उनके संरक्षण, संवर्धन तथा विकास के माध्यम से जिलों को एक मजबूत सांस्कृतिक और आर्थिक पहचान प्रदान करना है।

इस कार्यक्रम के तहत हर जिले में पंच गौरव के रूप में एक उत्पाद, एक उपज, एक वनस्पति प्रजाति, एक खेल और एक पर्यटन स्थल चिह्नित किया गया है। यह पहल जिलों की विरासत एवं पर्यावरण के संरक्षण में सहायक होगी और इससे आर्थिक उन्नति तथा रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे।

मुझे विश्वास है कि पंच गौरव कार्यक्रम से आमजन के लिए स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर, कौशल उन्नयन, उत्पादकता में वृद्धि एवं विभिन्न क्षेत्रों के मध्य स्वरक्ष प्रतिस्पर्धा की भावना उत्पन्न करने में मदद मिलेगी। साथ ही हमारे संयुक्त प्रयासों से विकसित राजस्थान का सपना भी साकार होगा।

जिले में पंच—गौरव कार्यक्रम अपने उद्देश्यों को हासिल करने में सफल हो, इसके लिए मैं अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।


(भजन लाल शर्मा)

पंच गौरव जिला पुस्तिकाः सर्वाई माधोपुर

राज्य सरकार द्वारा संचालित पंच गौरव कार्यक्रम के अन्तर्गत सर्वाई माधोपुर जिले के सर्वांगीण विकास हेतु पांच विशिष्ट क्षेत्रों का चयन किया गया है।



पंच गौरव जिला पुस्तिका



सर्वाई माधोपुर जिला

राजस्थान के प्रमुख पर्यटन और वन्यजीव संरक्षण स्थल के रूप में विख्यात



श्री भजन लाल शर्मा

माननीय मुख्यमंत्री, राजस्थान सरकार



पंच गौरव कार्यक्रम

राज्य सरकार की प्रमुख पहल द्वारा जिलों का सर्वांगीण विकास

यह पुस्तिका सर्वाई माधोपुर जिले के पांच गौरव - नीम, अमरूद, रणथंभौर, फुटबॉल और मार्बल मूर्ति कला का विस्तृत विवरण प्रस्तुत करती है।

सवाई माधोपुर

① सवाई माधोपुर राजस्थान का एक प्रमुख जिला है, जिसकी स्थापना 1948 में हुई थी। इसका कुल क्षेत्रफल 10,527 वर्ग किलोमीटर है जिसमें 11 तहसीलें शामिल हैं।

② यहां प्रसिद्ध रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान और त्रिनेत्र गणेश मंदिर स्थित हैं। जिले से राष्ट्रीय राजमार्ग NH-552 और 148D गुजरते हैं। बनास, चंबल, मोरेल और कुन्हारी जैसी महत्वपूर्ण नदियां इस क्षेत्र की जीवनरेखा हैं।

③ पंच गौरव कार्यक्रम के अंतर्गत, सवाई माधोपुर के पांच गौरव हैं - नीम (एक जिला एक वनस्पति), अमरुद (एक जिला एक फसल), रणथंभौर (एक जिला एक पर्यटन स्थल), फुटबॉल (एक जिला एक खेल) और मार्बल मूर्ति कला (एक जिला एक उत्पाद)।

श्रीमती शुभम चौधरी
जिला कलेक्टर

श्रीमती ममता गुप्ता
पुलिस अधीक्षक

श्रीमान गौरव बुडानिया
मुख्य कार्यकारी अधिकारी

पंच गौरव कार्यक्रम का परिचय

ⓘ राज्य सरकार द्वारा संचालित पंच गौरव कार्यक्रम के अन्तर्गत सवाई माधोपुर जिले के लिए निम्न पांच क्षेत्रों का चयन किया गया है:



एक जिला एक पर्यटन स्थल

रणथम्भौर नेशनल पार्क



एक जिला एक उत्पाद

मार्बल मूर्तिकला



एक जिला एक वनस्पति

नीम



एक जिला एक उपज

अमरुद



एक जिला एक खेल

फुटबॉल

ⓘ इन पांच क्षेत्रों के विकास से जिले की पहचान, रोजगार और आर्थिक समृद्धि को बढ़ावा मिलेगा।

पंच गौरव कार्यक्रमः एक जिला एक वनस्पति प्रजाति - नीम



विभाग का नाम

वन विभाग (कार्यालय उप वन संरक्षक सवाई
माधोपुर, आलनपुर नर्सरी के पास, सवाई
माधोपुर)

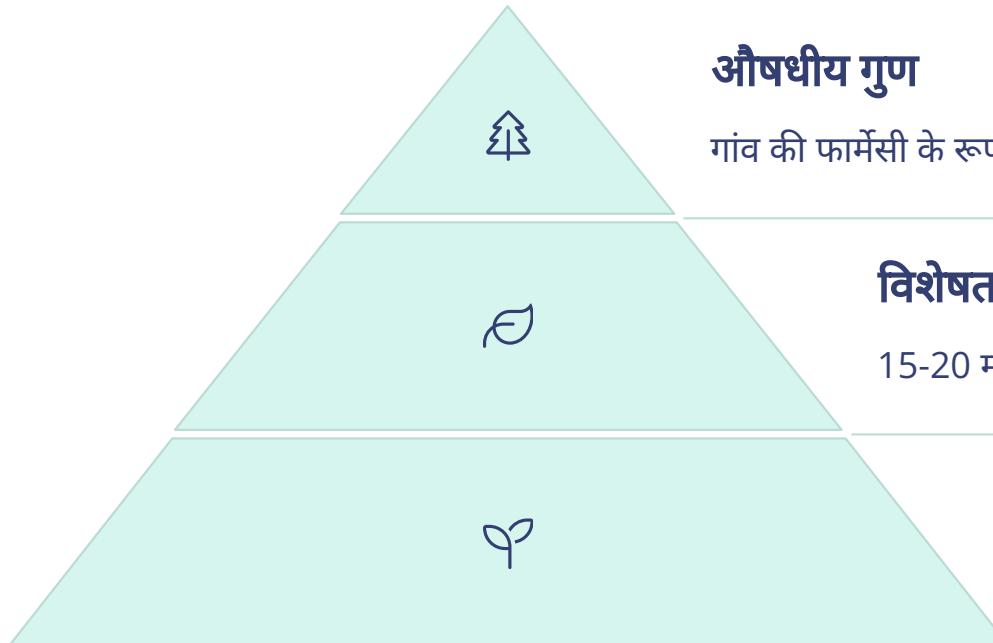


नोडल अधिकारी

श्री सुनील कुमार, उप वन संरक्षक
सवाईमाधोपुर



एक जिला एक वनस्पति - नीम



औषधीय गुण

गांव की फार्मेसी के रूप में जाना जाता है

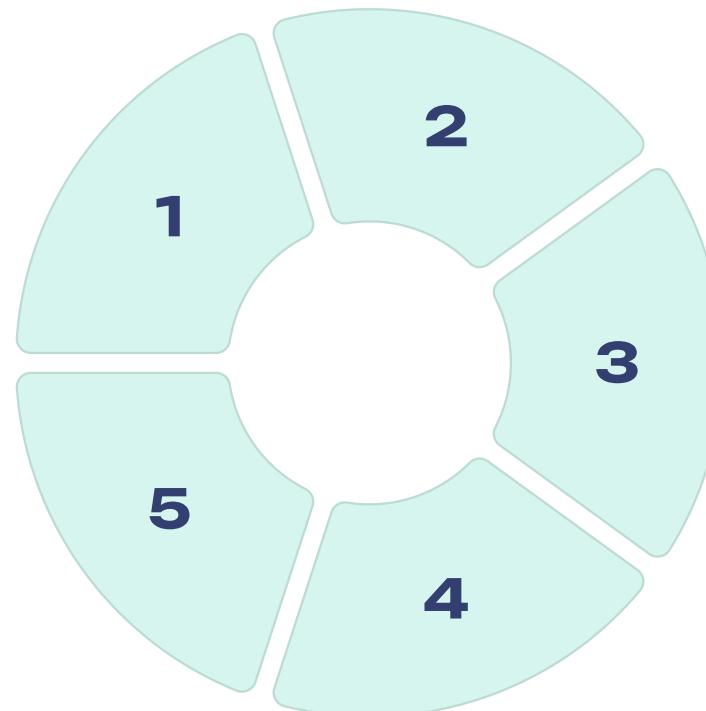
विशेषताएं

15-20 मीटर तक ऊंचा, तेजी से बढ़ने वाला पतझड़ वाला वृक्ष

अनुकूलन क्षमता

उच्च तापमान सहनीय, बंजर भूमि पर भी आसानी से उगता है

नीम के रासायनिक तत्व



अज्ञादिरैक्टिन

प्रमुख कीटनाशक गुण वाला यौगिक

सालानिन

कीटनाशक और औषधीय गुणों से युक्त

मेलियानट्रिओल

कीटों को भगाने वाला प्रभावी तत्व

निम्बिन

औषधीय गुणों से भरपूर यौगिक

निम्बिडिन

एंटी-इंफ्लेमेटरी गुणों वाला तत्व

नीम के स्वास्थ्य लाभ

♥ रक्त शोधन

कच्ची पत्तियां चबाने से
रक्त शुद्ध होता है।

🦷 दंत स्वास्थ्य

दातुन करने से मसूड़ों
की सूजन से आराम
मिलता है।

🚼 बाल स्वास्थ्य

पत्तियों का लेप बालों
में लगाने से बाल स्वस्थ
रहते हैं और कम झड़ते
हैं।

🕒 त्वचा रोग

पत्तियों को पानी में
उबालकर नहाने से चर्म
विकारों से बचाव होता
है।



नीम के कृषि लाभ

जैविक कीटनाशक

पत्तियों का घोल बनाकर फसल पर छिड़काव करने से एफिड्स, व्हाइटफ्लाई, टिझी, कैटरपिलर से फसल को बचाया जा सकता है।

मिट्टी सुधारक

नीम की छाल का प्रयोग नाइट्रोजन के अभाव की पूर्ति और फसल के पोषण के लिए किया जाता है।

प्राकृतिक उर्वरक

नीम केक शानदार उर्वरक एवं पोषक के रूप में काम करता है, जो मिट्टी की उर्वरता बढ़ाता है।



नीम पौधारोपण योजना

90,000

पौधे

वन विभाग द्वारा विभागीय नर्सरियों में सर्वाई
माधोपुर जिले हेतु तैयार किए जा रहे हैं

10%

वृक्षारोपण

आगामी मानसून सत्र में वन विभाग द्वारा
विभागीय पौधारोपण में नीम का प्रतिशत

₹9 लाख

अनुमानित व्यय

विभागीय नर्सरियों में पौधे तैयार करने हेतु
प्रस्तावित राशि



एक जिला एक उत्पाद - मार्बल मूर्तिकला



विभाग का नाम

उद्योग एवं वाणिज्य विभाग
(कार्यालय जिला उद्योग एवं
वाणिज्य केंद्र, सवाई
माधोपुर)



नोडल अधिकारी

श्री सुग्रीव मीना, महाप्रबंधक



एक जिला एक उत्पाद

मार्बल मूर्तिकला (ग्राम
बांसटोरडा)



एक जिला एक उत्पाद - मार्बल मूर्तिकला



कच्चा माल प्राप्ति

झिरी, मकराना, भैंसलाना, अम्बाजी और वियतनाम से पत्थर खरीदा जाता है



प्रारंभिक आकार

पत्थर की छंटाई और मूर्ति के अनुरूप कटाई की जाती है



मूर्ति निर्माण

छैनी-हथौड़े और हैण्ड कटर से पत्थर को मूर्ति का रूप दिया जाता है



परिष्करण

एमरी पत्थर, रेगमाल और जिंक ऑक्साइड से पॉलिश की जाती है

मार्बल मूर्तिकला का इतिहास

1

40 वर्ष पूर्व

श्री रामनिवास शर्मा, कैलाश चंद और रामदयाल गौड़ ने जयपुर से प्रशिक्षण लेकर गांव में कारोबार शुरू किया।

2

स्थानीय प्रशिक्षण

इन्होंने गांव के स्थानीय लोगों को मूर्तिकला का प्रशिक्षण दिया।

3

विकास

धीरे-धीरे यहां 40 दस्तकार काम करने लगे और कला का विस्तार हुआ।

4

वर्तमान स्थिति

आज बांसटोरडा, गंगवाडा और कोलाडा गांवों में मार्बल मूर्तिकला एक प्रमुख व्यवसाय है।



मार्बल मूर्तिकला की विशेषताएं



धार्मिक मूर्तियां

देवी-देवताओं की सुंदर और भावपूर्ण मूर्तियां बनाई जाती हैं।



जालियां

नक्काशीदार जालियां जो सुंदरता और कार्यात्मकता का संगम हैं।



छतरी और सिंहासन

परंपरागत शैली में निर्मित छतरियां और सिंहासन।





मार्बल मूर्तिकला का आर्थिक महत्व

40

दस्तकार

क्षेत्र में सक्रिय कुशल शिल्पकार

160

प्रत्यक्ष रोजगार

इस व्यवसाय से जुड़े लोगों की संख्या

₹150 लाख

प्रस्तावित विकास

मार्बल मूर्तिकला के संवर्धन एवं विकास हेतु अनुमानित कुल व्यय

युवा मामले एवं खेल विभाग

सर्वाई माधोपुर जिले में खेल गतिविधियों का संचालन एवं प्रबंधन



विभाग का नाम

युवा मामले एवं खेल विभाग,
सर्वाई माधोपुर



प्रमुख केंद्र

जिला खेलकूद प्रशिक्षण
केंद्र, स्टेडियम-दशहरा मैदान



नोडल अधिकारी

श्री अब्दुल वहीद, जिला
खेल अधिकारी



एक जिला एक खेल - फुटबॉल



इतिहास

1953 में जयपुर उद्योग लिमिटेड द्वारा फुटबॉल टीम का गठन किया गया।



उपलब्धियाँ

अखिल भारतीय स्तर की प्रतियोगिताओं में सवाई माधोपुर का नाम रौशन किया।



वर्तमान स्थिति

लगभग 800 महिला एवं पुरुष खिलाड़ी नियमित अभ्यासरत हैं।



पहचान

फुटबॉल सवाई माधोपुर की पहचान बन गया है।



फुटबॉल खेल मैदान

ⓘ जिले में छोटा राजबाग, बड़ा राजबाग, इंदिरा मैदान और पुलिस विभाग के मैदान सहित कुल 8 खेलने योग्य मैदान उपलब्ध हैं।





फुटबॉल विकास योजना

1

मैदानों का विकास

मौजूदा मैदानों का उन्नयन और नए मैदानों का निर्माण किया जाएगा।

2

प्रशिक्षकों की नियुक्ति

प्रत्येक मैदान पर फुटबॉल प्रशिक्षकों की नियुक्ति की जाएगी।

3

उपखंड स्तर पर विकास

चौथ का बरवाड़ा, गंगापुर सिटी, बामनवास, खंडार और मलारना ढुंगर में स्टेडियम निर्माण।

4

प्रशिक्षण सुविधाएं

वर्ल्ड क्लास इन्फ्रास्ट्रक्चर और खेल सामग्री उपलब्ध कराई जाएगी।

पंच गौरव कार्यक्रमः एक जिला एक पर्यटन स्थल

रणथम्भौर नेशनल पार्क

रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान सवाई माधोपुर जिले का प्रमुख पर्यटन स्थल है, जो अपनी समृद्ध जैव विविधता और बाघों के लिए प्रसिद्ध है।

विभाग का नाम

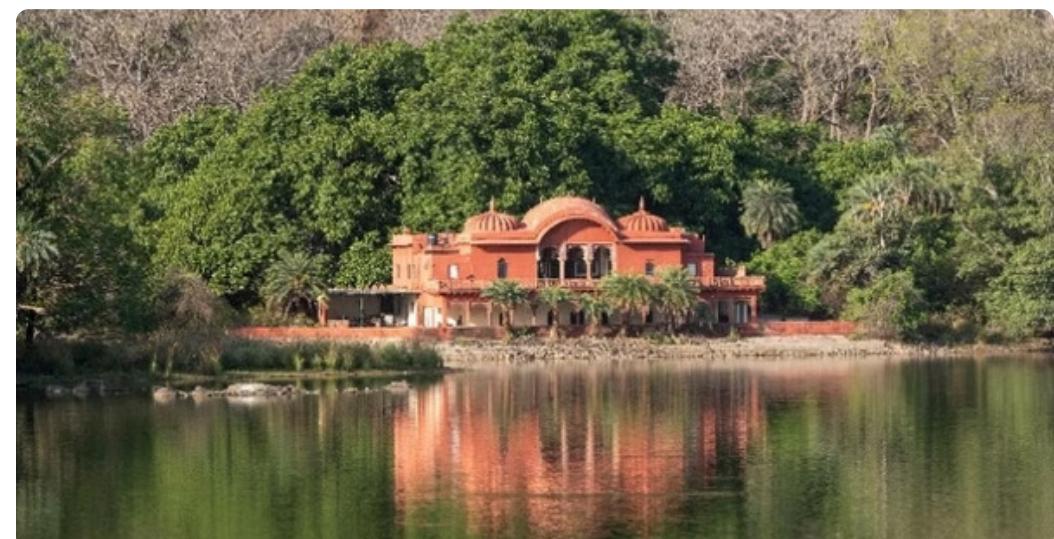
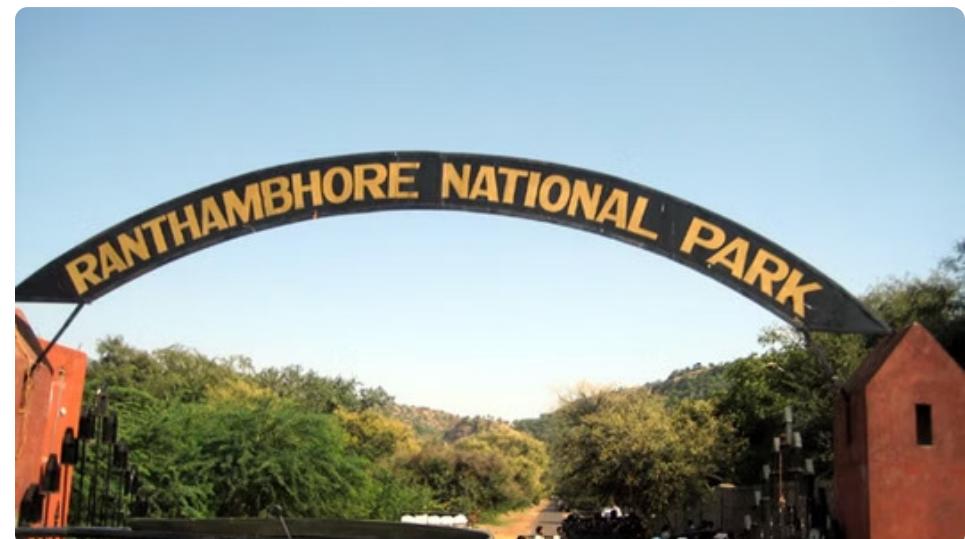
वन विभाग (कार्यालय उप वन संरक्षक राष्ट्रीय रणथम्भौर बाघ परियोजना, जिला सवाई माधोपुर)

नोडल अधिकारी

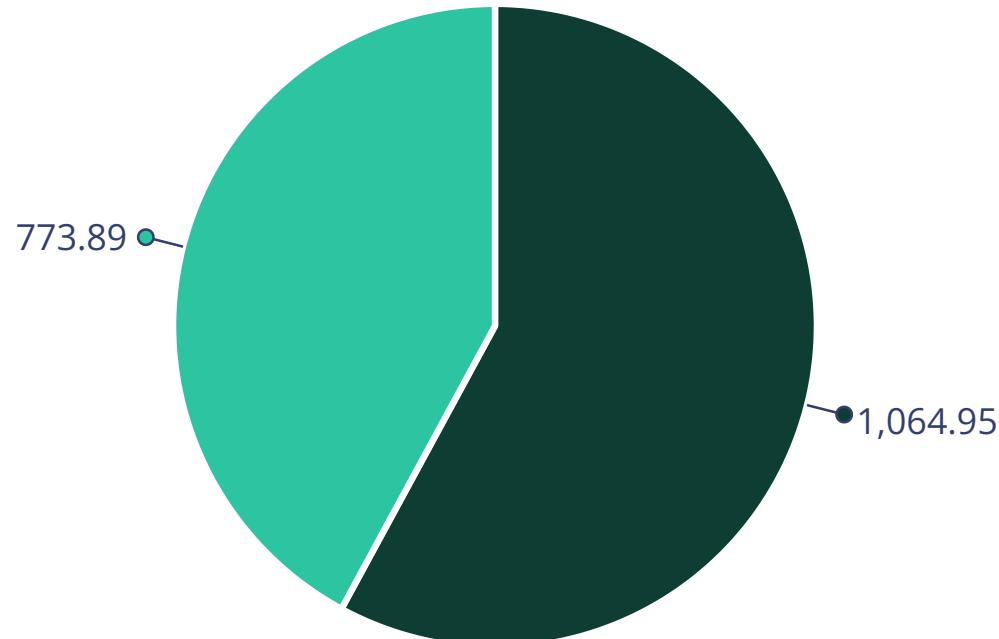
डॉ. रामानंद भाकर, उप वन संरक्षक, राष्ट्रीय रणथम्भौर बाघ परियोजना, सवाई माधोपुर



रणथम्भौर नेशनल पार्क



एक जिला एक पर्यटन स्थल - रणथम्भौर नेशनल पार्क



■ सवाई माधोपुर वनमंडल ■ करौली वनमंडल

रणथम्भौर टाईगर रिजर्व 1838.84 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ है, जिसमें सवाई माधोपुर, करौली, बूंदी एवं टोंक जिले के क्षेत्र सम्मिलित हैं।

रणथम्भौर की जैवविविधता

स्तनधारी

- बिल्ली परिवार की 7 प्रजातियां
- डॉग परिवार की 4 प्रजातियां
- नेवले की 2 प्रजातियां
- अन्य 38 प्रजातियां

पक्षी और सरीसृप

- पक्षियों की 315 प्रजातियां
- सरीसृपों की 33 प्रजातियां
- कछुए, मगरमच्छ, सांप आदि

वनस्पति

- फौधों की 402 प्रजातियां
- धोंक, सालर, खैर, रोंज
- तेंदू, कचनार, बांस आदि

बाघों की संख्या

29

नर बाघ

रणथम्भौर में विचरण करने वाले वयस्क नर बाघों की संख्या

32

मादा बाघ

रणथम्भौर में विचरण करने वाली वयस्क मादा बाघों की संख्या

16

शावक

अल्प व्यस्क और शावक बाघों की संख्या

77

कुल बाघ

2023 में फेज-4 गणना के अनुसार कुल बाघों की संख्या





वन्यजीवों की अनुमानित संख्या

वन्यजीव	2019	2020	2021	2022	2023
टाईगर	51	64	77	74	77
सांभर	9538	10453	11490	12164	16427
चीतल	13872	17923	18438	21747	22056
जंगली सुअर	6349	5441	5270	2005	3179

बाघ संरक्षण कार्यक्रम

निगरानी

M-STrIPES ऐप से दैनिक ट्रैकिंग और कैमरा ट्रैप द्वारा मॉनिटरिंग

जागरूकता

बाघ रक्षक कार्यक्रम के माध्यम से स्थानीय लोगों को जागरूक करना



सुरक्षा

रात्रिकालीन गश्त और संवेदनशील क्षेत्रों में विशेष टीमों की तैनाती

जल प्रबंधन

जल संचयन संरचनाओं का निर्माण और रखरखाव

पंच गौरव कार्यक्रम: एक जिला एक फसल "अमरुद"



फसल विशेषता

अमरुद सवाई माधोपुर जिले की
चिन्हित फसल है



विभाग का नाम

उद्यान विभाग (कार्यालय
उपनिदेशक उद्यान, जिला सवाई
माधोपुर)



नोडल अधिकारी

डॉ. हेमराज मीना, उपनिदेशक



पंच गौरव कार्यक्रम के अंतर्गत सवाई माधोपुर जिले की प्रमुख फसल के रूप में अमरुद को चिन्हित किया गया है।

अमरुद की खेती के लिए उपयुक्त परिस्थितियां



उपयुक्त मिट्टी

गहरी उपजाऊ बलुई दोमट भूमि खेती के लिए काफी उपयुक्त है।



सिंचाई

गर्मियों में 7-10 दिन और सर्दियों में 15-20 दिन के अंतर से सिंचाई करें।



रोपण का समय

जुलाई-अगस्त या फरवरी के अंत में पौधे लगाए जा सकते हैं।



अमरुद की प्रमुख किस्में और प्रवर्धन

प्रमुख किस्में

इलाहाबादी सफेदा और लखनऊ-49 प्रमुख किस्में हैं।

सवाई माधोपुर जिला अमरुद की खेती के लिए विशेष रूप से उपयुक्त है।

वानस्पतिक प्रवर्धन

इनार्चिंग, स्टूलिंग, लेयरिंग आदि विधियां अच्छी रहती हैं।

प्रवर्धन का सर्वोत्तम समय जुलाई-अगस्त है।



प्रमुख समस्याएं और उनका निदान

फल मक्खी
बरसात में फलों को विशेष हानि पहुंचाती है।
प्रोपेनोफॉस 50 ई.सी. का छिड़काव करें।



नेमोटोड रोग
कार्बोफ्यूरान 3जी 50-150 ग्राम थावलों में
डालकर दो दिन तक पानी न दें।

जस्ते की कमी
चिलिटेड जिंक 1 ग्राम/लीटर पानी में घोल कर
अप्रैल व जून में छिड़काव करें।

कृषक
अमरुद उत्पादक

हेक्टेयर
अनुमानित क्षेत्रफल

उत्पादन
प्रति पौधा औसत